सत्र 2019–20

स्वाध्यायी

बी. म्यूज. तृतीय वर्ष (तबला)

प्रथम प्रश्न पत्र

संगीत सिद्धांत

समय 3 घण्टा पूर्णांक : 100

न्यूनतम उत्तीर्णांक : 33

इकाई–1

1. भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास (भरतकाल से अब तक)।
2. भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों का स्थान एवं महत्व।

इकाई–2

1. उत्तर भारतीय तथा कर्नाटक ताल पद्धति का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन।
2. शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त उत्तर एवं दक्षिण भारत के निम्नलिखित अवनद्ध एवं घन वाद्यों का सचित्र वर्णनः– तबला, पखावज, मृदंगम, घटम, खंजरी, तविल, मुखचंग।

इकाई–3

1. तबला एकल वादन का महत्व तथा एकल वादन हेतु प्रयुक्त रचनाओं का क्रम एवं स्वरूप।
2. प्राचीन शास्त्र ग्रंथों के आधार पर अवनद्ध वाद्य–वादकों के गुण दोषों की जानकारी (तबला वादक के संदर्भ में)।

इकाई–4

1. बाज तथा घराने की परिभाषा।
2. तबला वादन के विभिन्न घरानों का ऐतिहासिक विवरण एवं वादन विशेषताओं का ज्ञान।

इकाई–5

1. निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय एवं उनके वादन की विशेषताएंः– उ. अफाक हुसैन, उ. करामतुल्ला खॉ, उ. जहांगीर खॉ, पं. किशन महाराज, पं. सामता प्रसाद, उ. अल्लारक्खा, उ. जाकिर हुसैन, स्वामी रामशंकरदास 'पागलदास'।

सत्र 2019–20

स्वाध्यायी

बी. म्यूज. तृतीय वर्ष (तबला)

द्वितीय प्रश्न पत्र

संगीत शास्त्र का क्रियात्मक ज्ञान

समय 3 घण्टा पूर्णांक : 100

न्यूनतम उत्तीर्णांक : 33

इकाई–1

1. पिछले सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों की पुनरावृत्ति। विभिन्न बंदिशों को ताललिपि में लिखने की क्षमता।

इकाई–2

2. मार्ग एवं देशी तालों का सामान्य परिचय। पाश्चात्य संगीत लिपि (स्टाफ नोटेशन पद्धति) का सामान्य ज्ञान।

इकाई–3

3. टुकडा, मुखडा, मोहरा, तिहाई के रचना सिद्धांत का ज्ञान तथा दिये गये बोलों के आधार पर रचनाएँ कर लिपिबद्ध करना।
4. कायदा और पेशकार के विस्तार के सिद्धांतों का विवेचन।

इकाई–4

5. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का सोदाहरण व्याख्या– दमदार तिहाई, बेदम तिहाई, लग्गी, एकहत्थी, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, लडी, नौहक्का, गत–फर्द।
6. गत एवं उसके विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित विवेचन।

इकाई–5

7. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों को निम्नांकित लयकारियों में लिखने का अभ्यास :– आड, कुआड तथा बिआड।
8. संगीत संबंधी किसी विषय पर निबंध लेखन।

पाठ्यक्रम के निर्धारित तालः– त्रिताल, तिलवाडा, सवारी, आडाचौताल, धमार, झूमरा, दीपचन्दी, एकताल, चौताल, झपताल, सूलताल, कहरवा, रूपक, तीव्रा, दादरा, रूद्र, चारताल की सवारी।

सत्र 2019–20
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
बी. म्यूज. तृतीय वर्ष (तबला)
प्रायोगिक

पूर्णांक : 200
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 66

1. पिछले पाठ्यक्रम की (बी.म्यूज. प्रथम तथा द्वितीय वर्ष) की पुनरावृत्ति।
2. झपताल, रूपक, आडाचौताल एवं एकताल में पेशकार (न्यूनतम पांच प्रकार), तीन कायदे (न्यूनतम चार पल्टे), एक रेला, परन, चक्रदार, फरमाईशी एवं कमाली चक्रदार का लहरे के साथ स्वतंत्र वादन।
3. त्रिताल में विभिन्न घरानों की बंदिशों सहित सम्पूर्ण एकल वादन।
4. त्रिताल में प्रत्येक मात्रा से उठने वाली विभिन्न तिहाईयों (बेदम, दमदार तथा नौहक्का) का अभ्यास।
5. ग्यारह तथा पन्द्रह मात्राओं की तालों में तिहाईयॉ, टुकडे तथा परन बजाने की क्षमता।
6. पाठ्यक्रम के तालों के ठेके हाथ से ताली देकर दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड की लयकारी में पढना एवं तबले पर बजाना।
7. गायन, वादन एवं नृत्य की संगति का अभ्यास।
8. दी गई तिहाई को दम अथवा लयकारी के प्रयोग से विभिन्न तालों में समायोजित करने का अभ्यास।

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
बी. म्यूज. तृतीय वर्ष (तबला)
प्रायोगिक (मंच प्रदर्शन)

पूर्णांक : 150
न्यूनतम उत्तीर्णांक : 50

1. आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष न्यूनतम 15 मिनिट तक परीक्षार्थी की इच्छानुसार किसी ताल में एकल वादन।
2. परीक्षक द्वारा दिये गये तालों में से किसी एक ताल में एकल वादन।
3. गायन अथवा वादन की संगति।
4. तबला मिलाने का ज्ञान।

आंतरिक मूल्यांकन

पूर्णांकः 50

आवश्यक निर्देश–: आंतरिक मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रत्येक सेमेस्टर एवं प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों को प्रायोगिक परीक्षा के समय दो फाईलें प्रस्तुत करनी होगी।

1. कक्षा में सीखी गई रचनाओं को तालिपि में लिखना।
2. विश्वविद्यालय/नगर में आयोजित संगीत कार्यक्रमों की रिपोर्ट।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
4. ताल परिचय भाग 1 एवं 2 – पं. गिरीषचन्द्र श्रीवास्तव
5. पखावज एवं तबला के घराने एवं परम्पराएँ – डॉ. अबान मिस्त्री
6. ताल वाद्य शास्त्र – डॉ. एम. बी. मराठे